

BHIC-101 B. A. (HONOURS) HISTORY

(BAHIH)

BHIC-101: HISTORY OF INDIA-1

IMPORTANT QUESTIONS WITH ANSWERS

PART 2 HINDI AND ENGLISH BOTH

1. Technology Achievements in Ancient India (प्राचीन भारत में तकनीकी उपलब्धियां)

Mathematics: Ancient India made groundbreaking contributions to mathematics, particularly with the invention of zero, the decimal system, and developments in algebra and trigonometry. *Aryabhata*, a prominent mathematician and astronomer from the 5th century CE, introduced the concept of zero and worked on the approximation of pi (π). He also proposed the concept of Earth's rotation on its axis. The mathematical principles developed in ancient India laid the foundation for much of modern mathematics.

प्राचीन भारत ने गणित के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान किए, विशेष रूप से शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली, और त्रिकोणमिति और बीजगणित के विकास में। 5वीं सदी के गणितज्ञ और खगोलज्ञ *आर्यभट्ट* ने शून्य की अवधारणा का परिचय दिया और पाई (π) का मान निकाला। उन्होंने पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने का भी प्रस्ताव दिया। प्राचीन भारत में विकसित गणितीय सिद्धांत आधुनिक गणित की नींव बने।

Metallurgy: India was renowned for its advanced metallurgical skills. The *Iron Pillar of Delhi*, which dates back to the 4th century CE, stands as evidence of ancient India's knowledge of iron smelting. Indian blacksmiths were also skilled in producing high-quality steel, known as Wootz steel, which became famous worldwide for its strength and sharpness. The metallurgical techniques of ancient India were far ahead of their time.

भारत अपने उन्नत धातुकर्म कौशल के लिए प्रसिद्ध था। *दिल्ली का लौह स्तंभ*, जो 4वीं सदी ईस्वी का है, प्राचीन भारत के लोहे के गलाने के ज्ञान का प्रमाण है। भारतीय लोहार उच्च गुणवत्ता वाले इस्पात, जिसे वूटज़ स्टील कहा जाता था, बनाने में भी माहिर थे, जो अपनी ताकत और धार के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हुआ। प्राचीन भारत की धातुकर्म तकनीकें अपनी समय से बहुत आगे थीं।

Astronomy: Indian astronomers such as *Aryabhata* and *Varahamihira* made remarkable contributions to the study of the cosmos. *Aryabhata* worked on the calculation of the length of the year, the rotation of the Earth, and the movements of planets. He was one of the first to propose that the Earth is spherical and rotates on its axis. *Varahamihira* compiled and authored several key astronomical texts like the *Pancha Siddhantika*, which described the five main astronomical systems of the time.

भारतीय खगोलज्ञों जैसे *आर्यभट्ट* और *वराहमिहिर* ने ब्रह्मांड के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। *आर्यभट्ट* ने वर्ष की लंबाई, पृथ्वी के घूमने और ग्रहों की गति की गणना की। उन्होंने यह भी प्रस्तावित किया कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है। *वराहमिहिर* ने कई महत्वपूर्ण खगोलशास्त्र संबंधी ग्रंथों का संकलन किया, जैसे *पंच सिद्धांतिका*, जिसमें उस समय के पांच प्रमुख खगोलशास्त्र प्रणालियों का वर्णन किया गया।

Medicine: Ancient Indian medicine, primarily through the practice of *Ayurveda*, involved a holistic approach to health. Key texts like the *Charaka Samhita* and *Sushruta Samhita* form the foundation of Indian medical knowledge. *Sushruta Samhita* details over 300 surgical procedures, including plastic surgery and cataract removal, indicating an advanced understanding of surgery. *Charaka Samhita* focuses on herbal medicine and diet, advocating for preventive healthcare.

प्राचीन भारतीय चिकित्सा, विशेष रूप से *आयुर्वेद* के माध्यम से, स्वास्थ्य के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाती थी। प्रमुख ग्रंथ जैसे *चरक संहिता* और *सुश्रुत संहिता* भारतीय चिकित्सा ज्ञान की नींव हैं। *सुश्रुत संहिता* में 300 से अधिक शल्यक्रियाओं का विवरण है, जिसमें प्लास्टिक सर्जरी और मोतियाबिंद की सर्जरी शामिल हैं, जो शल्य चिकित्सा के उन्नत ज्ञान को दर्शाता है। *चरक संहिता* हर्बल चिकित्सा और आहार पर ध्यान केंद्रित करती है, और स्वास्थ्य की रोकथाम के लिए सिफारिशें करती है।

2. Position of Women in Ancient India (प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति)

Early Vedic Period: In the Early Vedic period, women enjoyed a relatively high status. They were free to participate in religious rituals, receive education, and even engage in intellectual debates. Some women, like *Gargi* and *Maitreyee*, were respected scholars and philosophers. Women also had the right to own property.

प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत उच्च थी। वे धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने, शिक्षा प्राप्त करने और बौद्धिक चर्चाओं में शामिल होने के लिए स्वतंत्र थीं। कुछ महिलाएं, जैसे *गार्गी* और *मैत्रेयी*, सम्मानित विद्वान और दार्शनिक थीं। महिलाओं को संपत्ति के अधिकार भी थे।

Later Vedic and Post-Vedic Period: However, as time progressed, the status of women began to decline. The later Vedic period and post-Vedic texts show the increasing dominance of patriarchy. Women's participation in public life became restricted, and practices like *Sati*, child marriage, and the restriction of education began to emerge.

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई। उत्तर वैदिक काल और बाद के वैदिक ग्रंथों में पितृसत्तात्मकता का प्रभुत्व बढ़ता हुआ दिखाई देता है। महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में भागीदारी सीमित हो गई और *सति*, बाल विवाह और शिक्षा की रोकथाम जैसी प्रथाएँ प्रचलित होने लगीं।

Classical Period (Maurya, Gupta Era): In the classical period, some women held positions of power, like *Prabhavati Gupta*, the queen consort of the Gupta dynasty. However, despite these exceptions, women were generally confined to domestic roles and were often treated as inferior to men. The status of women in society was largely determined by the interpretation of religious texts.

क्लासिकल काल (मौर्य, गुप्त काल) में कुछ महिलाएं शक्ति के पदों पर थीं, जैसे *प्रभावती गुप्त*, गुप्त वंश की महारानी। हालांकि, इन अपवादों के बावजूद, महिलाएं सामान्यतः घरेलू भूमिकाओं तक सीमित थीं और अक्सर पुरुषों से कमतर समझी जाती थीं। समाज में महिलाओं की स्थिति मुख्य रूप से धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या द्वारा निर्धारित होती थी।

3. Emergence of Buddhism and Jainism during the 6th Century BCE (छठी शताब्दी के दौरान बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उद्भव)

The 6th century BCE saw the rise of two significant religious movements in India:

Buddhism and **Jainism**, both challenging the existing social and religious order and offering alternatives to the ritualistic practices of Vedic religion.

6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में दो महत्वपूर्ण धार्मिक आंदोलन उभरे: **बौद्ध धर्म और **जैन धर्म**, दोनों ने मौजूदा सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था को चुनौती दी और वैदिक धर्म की अनुष्ठानिक प्रथाओं के विकल्प प्रस्तुत किए।

Buddhism (बौद्ध धर्म):

- **Founder:** *Siddhartha Gautama*, who became known as **Buddha**, was born around 563 BCE in Lumbini (now in Nepal). Born a prince, he left his royal life in search of enlightenment, which he achieved after years of meditation under the Bodhi tree.
संस्थापक: *सिद्धार्थ गौतम*, जिन्हें **बुद्ध** के नाम से जाना जाता है, का जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व लुम्बिनी (वर्तमान नेपाल) में हुआ था। वे एक राजकुमार थे, जिन्होंने आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए अपना राजसी जीवन त्याग दिया, और बोधि वृक्ष के नीचे वर्षों तक ध्यान करने के बाद उन्होंने इसे प्राप्त किया।
- **Teachings:** Buddha rejected the caste system and the excessive rituals of the Vedic religion. His core teachings focused on the **Four Noble Truths** and the **Eightfold Path**, which he believed could lead to the cessation of suffering (Dukkha) and the attainment of Nirvana (enlightenment).
उपदेश: बुद्ध ने जातिवाद और वैदिक धर्म के अत्यधिक अनुष्ठानों को नकारा। उनके मुख्य उपदेश **चार आर्य सत्य** और **आठगुणी मार्ग** पर आधारित थे, जिन्हें उन्होंने यह मानते हुए बताया कि ये दुःख (दुःख) का अंत और निर्वाण (आध्यात्मिक मुक्ति) प्राप्त करने का मार्ग है।
 - **Four Noble Truths (चार आर्य सत्य):**
 1. Life is filled with suffering (Dukkha).
जीवन में दुःख है।
 2. Suffering is caused by desire (Tanha).
दुःख का कारण तृष्णा (इच्छा) है।
 3. Suffering can be overcome by eliminating desire.
तृष्णा को समाप्त कर दुःख को समाप्त किया जा सकता है।
 4. The path to end suffering is through the Eightfold Path.
दुःख के अंत का मार्ग आठगुणी मार्ग के माध्यम से है।
 - **Eightfold Path (आठगुणी मार्ग):**
Right view, right intention, right speech, right action, right livelihood, right effort, right mindfulness, and right concentration.
सही दृष्टिकोण, सही इरादा, सही वाणी, सही कार्य, सही जीविका, सही प्रयास, सही सतर्कता, और सही ध्यान।

Jainism (जैन धर्म):

- **Founder:** *Mahavira*, born in 599 BCE in Bihar, India, is regarded as the 24th Tirthankara in Jainism. He reorganized and formalized the Jain teachings, promoting the path of asceticism and renunciation.
संस्थापक: महावीर, जिनका जन्म 599 ईसा पूर्व बिहार, भारत में हुआ था, जैन धर्म के 24वें तिर्थंकर के रूप में माने जाते हैं। उन्होंने जैन शिक्षाओं को पुनः व्यवस्थित और औपचारिक रूप से प्रस्तुत किया, तपस्विता और संयम के मार्ग को बढ़ावा दिया।
- **Teachings:** Jainism emphasizes **extreme non-violence (Ahimsa)**, **truth (Satya)**, and **asceticism** as the way to liberation (Moksha). Mahavira taught that liberation comes from freeing the soul from the bondage of karma through self-discipline and self-control.
उपदेश: जैन धर्म अत्यधिक अहिंसा (अहिंसा), सत्य (सत्य) और तपस्विता (Asceticism) को मोक्ष प्राप्ति का मार्ग मानता है। महावीर ने सिखाया कि मोक्ष आत्मा को कर्मों के बंधन से मुक्त करने के द्वारा प्राप्त होता है, जो आत्म-नियंत्रण और संयम के माध्यम से संभव है।
 - **Ahimsa (Non-violence):** Ahimsa is the highest virtue in Jainism, promoting non-violence not only towards humans but also towards animals, plants, and even microscopic organisms.
अहिंसा (अत्यधिक अहिंसा): अहिंसा जैन धर्म में सर्वोच्च गुण है, जो केवल मनुष्यों के लिए नहीं, बल्कि जानवरों, पौधों और सूक्ष्म जीवों के प्रति भी लागू होती है।
 - **Asceticism:** Jainism advocates a strict ascetic lifestyle, including celibacy, fasting, and self-purification, to achieve liberation.
तपस्विता (Asceticism): जैन धर्म में मोक्ष प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्विता जीवन शैली की सिफारिश की जाती है, जिसमें ब्रह्मचर्य, उपवासी और आत्म-शुद्धिकरण शामिल हैं।

4. Medicine in Ancient India (प्राचीन भारत की चिकित्सा)

Sushruta and Charaka (सुश्रुत और चरक):

Ancient Indian medicine, particularly in the fields of **surgery** and **herbal treatment**, was highly advanced. Two foundational texts, the *Sushruta Samhita* and *Charaka Samhita*, form the basis of traditional Indian medical knowledge.

सुश्रुत और चरक (Sushruta and Charaka):

प्राचीन भारतीय चिकित्सा, विशेष रूप से **शल्य चिकित्सा** और **हर्बल उपचार** के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नत थी। दो महत्वपूर्ण ग्रंथ, *सुश्रुत संहिता* और *चरक संहिता*, पारंपरिक भारतीय चिकित्सा ज्ञान का आधार हैं।

- **Sushruta Samhita:** Written around 600 BCE, this text is one of the earliest and most comprehensive works on surgery in the world. It contains detailed descriptions of over **300 surgical procedures**, including **cataract surgery**, **plastic surgery**, and **bone setting**.
सुश्रुत संहिता: लगभग 600 ईसा पूर्व में लिखा गया यह ग्रंथ दुनिया में शल्य चिकित्सा पर सबसे प्राचीन और व्यापक ग्रंथों में से एक है। इसमें **300 से अधिक शल्य प्रक्रियाओं** का विस्तृत विवरण है, जिनमें **मोटियाबिंद सर्जरी**, **प्लास्टिक सर्जरी**, और **हड्डी सेट करने** जैसी प्रक्रियाएं शामिल हैं।

- **Charaka Samhita:** This ancient medical text primarily deals with **Ayurvedic medicine**, focusing on the **use of herbs, diet, and lifestyle** for maintaining health and curing diseases. It also emphasizes the balance of the body's three primary energies (doshas) — **Vata, Pitta, and Kapha**.

चरक संहिता: यह प्राचीन चिकित्सा ग्रंथ मुख्य रूप से **आयुर्वेदिक चिकित्सा** पर आधारित है, जिसमें **जड़ी-बूटियों, आहार, और जीवनशैली** के माध्यम से स्वास्थ्य बनाए रखने और रोगों का इलाज करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसमें शरीर की तीन प्रमुख ऊर्जा (दोषों) — **वात, पित्त, और कफ** के संतुलन पर भी जोर दिया गया है।

LINK OF PART 1 IS IN THE DESCRIPTION BOX

JOIN WHATSAPP CHANNEL FOR LINKS OF PDF AND LIVE CLASSES .

VISIT MY WEBSITE HINDUSTANKNOWLEDGE.COM FOR PDF'S

Scholarly Minds